

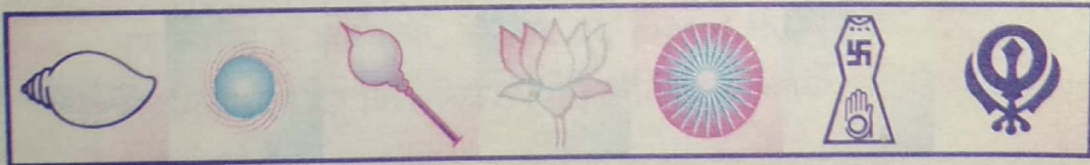
| ङ - समिधा |

अन्य पुस्तको की pdf के लिए
टेलीग्राम पर ङ-समिधा चैनल से जुड़े।



हिन्दुत्व

जीवन दृष्टि
जीवन पद्धति



राष्ट्र जागरण अभियान
युगाब्द 5102

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

- (५) **स्त्रीत्व के प्रति आदर** : स्त्रीत्व को अत्यधिक आदर प्रदान करना, हिन्दू जीवन पद्धति के महत्वपूर्ण मूल्यों में से एक है। स्त्री को कामसुख की वस्तु न मानकर, दैवीय-सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्वीकार किया जाता है। स्वयं की पत्नी को छोड़कर वह भी केवल उसकी पत्नी की भूमिका में; प्रत्येक स्त्री के साथ अपनी माता के समान व्यवहार करना, हिन्दू जीवन पद्धति का अभिन्न अंग है। प्रत्येक स्त्री जिसमें बालिकायें भी सम्मिलित हैं, मातृत्व के दैवीस्वरूप में स्वीकार की जाती हैं। इस मूल्य का विकास एवं संरक्षण ही स्त्रियों पर घात करने की पुरुषों की मूल प्रवृत्ति के विरुद्ध सर्वाधिक प्रतिरोधी उपाय है।
- (६) **करुणा** : मनुष्य सहित सभी जीवित प्राणियों के प्रति प्रेम एवं दया भाव रखना चाहिए क्योंकि उनमें से प्रत्येक में हमारी तरह ही आत्मा है और जिसमें परमात्मा (ईश्वर) से विकसित होने वाला समान प्रकाश पुंज निहित है। यही हिन्दू जीवन पद्धति का एक अन्य आयाम है। हिन्दू जीवन पद्धति सरल जीवन तथा पानी, खनिज, वृक्ष एवं वनस्पतियों जैसे प्राकृतिक संसाधनों के न्यूनतम उपयोग पर बल देती है, क्योंकि इनका लाभ सदैव ही सभी जीवित प्राणियों के लिये होना चाहिये।
- (७) **सच्चा जीवन** : अवैधानिक धन का अर्जन न करना, अनैतिक एवं अवैधानिक इच्छाओं की पूर्ति में संलग्न न होना तथा एक सच्चा जीवन बिताना हिन्दू जीवन पद्धति का ही एक अन्य पक्ष है। यहाँ सच्चाई, सिद्धांत है केवल नीति मात्र नहीं।
- (८) **संयम या इन्द्रिय निग्रह** : एक मनुष्य को 'आत्म संयम' के गुण का विकास करना चाहिये क्योंकि यही केवल उसके मन को नियंत्रित कर सकता है। मन ही मनुष्यों के सभी अच्छे या बुरे कार्यों का मूल स्रोत है। यह गुण व्यक्ति के शारीरिक, बौद्धिक एवं वित्तीय संसाधनों को इस रूप से नियमित करने हेतु कि इनका उपयोग सदैव अच्छे कार्यों के लिये हो; अति आवश्यक है।
- (९) **त्रिकोण शुद्धि** : व्यक्ति के विचार, वाणी तथा कर्म के बीच सामंजस्य होना चाहिये। इसका अभिप्राय है कि व्यक्ति को वही बोलना चाहिये, जो वह अपने मन में सोचता है और तदनु रूप ही कार्य करना चाहिये। यही शरीर, मन एवं आत्मा की सच्चाई है।

(१०) **पारिवारिक जीवन** : एक पुरुष एवं स्त्री के मध्य विवाह के माध्यम से निर्मित पति-पत्नी के संबंधों की पवित्रता, जिससे परिवार अस्तित्व में आता है तथा इनके बीच संबंधों का अटूट होना ही ; हिन्दू जीवन पद्धति में प्रतिपादकों द्वारा प्रदत्त सुदृढ़ आधार है। उस पर ही सामाजिक जीवन संरचित है। अतः पारिवारिक जीवन को सर्वोच्च महत्व दिया गया है। यह कहा जाता है कि 'जो अच्छा पारिवारिक जीवन बिता रहे हैं उन पर दैवी कृपा है।' इसी काल में, व्यक्ति को अर्थोपार्जन एवं परिवारयापन, सभी अर्जन न करने वाले पारिवारिक सदस्यों को सामाजिक एवं आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना, साथ ही समाज की भी किसी व्यवसाय अथवा व्यापार अथवा कार्य द्वारा सेवा करना तथा बच्चे पैदा करना, उन्हें बड़ा करना एवं अच्छे नागरिक के रूप में उन्हें ढालना - जैसे उत्तरदायित्वों का वहन निर्विघ्न करना पड़ता है। परिवार के अन्य उत्तरदायित्व-अतिथि सत्कार, जरूरतमंदों की सहायता तथा सर्वजन हिताय कर्म भी रहे हैं।

(११) **माता की संकल्पना** : मां (माता) को ईश्वर के समान, सर्वोच्च पद इसलिये दिया जाता रहा है, क्योंकि वह व्यक्ति को जन्म देती है, उसका पालन-पोषण करती है, अपने बच्चों के कल्याण एवं भलाई के लिये असाधारण त्याग व कष्ट सहन करती है। व्यक्ति के लिये, अपनी माता से बढ़कर दूसरा कोई प्यारा नहीं है। सभी स्त्रियों को माता के समकक्ष ही स्थान दिया गया है।

माता के प्रति कृतज्ञता की भावना का विस्तार पृथ्वी तक समाहित है जो कि हमें वह सब कुछ प्रदान करती है जिसकी हमें आवश्यकता है अतः उसकी पूजा 'भू-माता' के रूप में की जाती है। इसी प्रकार की भावना मातृ-भूमि (मदरलैण्ड) शब्द से प्रस्फुटित होती है। इस कारण हिन्दू जीवन पद्धति में किसी का अपना देश केवल धन या सम्पत्ति का द्योतक नहीं होता है, वरन् इसे माता के स्थान पर रखा गया है। इसलिये हम भारत को, भारत माता मानते हैं। केवल एक जयघोष 'भारत माता की जय' या 'वन्दे मातरम्' इस भूमि के सभी जनों को उनकी भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र इत्यादि के विभेद होते हुये भी इसी कारण प्रेरित करता है और एकता के सूत्र में जोड़ता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर उपाख्य श्रीगुरुजी ने हमारी मातृभूमि के प्रति हमारे स्नेह की

व्याख्या करते हुये इस प्रकार कहा है -

‘किसी की माता कितनी भी आकर्षणविहीन, अशिक्षित अथवा अन्य रूप में अशक्त हो, वह पृथ्वी पर सर्वाधिक प्यारी है। भारत माता के प्रति यही हमारी मान्यता है।’

प्रत्येक हिन्दू मातृत्व को अत्यन्त महत्व देता है और उसमें स्वमाता (अपनी माता) के प्रति गहन आदर होता है। स्त्री-माता (माता के रूप में स्त्री), भू-माता (पृथ्वी माता) तथा भारतमाता (उन लोगों के लिये जिनकी मातृभूमि भारत से पृथक है उनके लिये वह देश) इसी कारण से एक हिन्दू जो भी देश उसकी मातृ-भूमि हो उस देश के प्रति निष्ठावान होता है। यह हिन्दू जीवन पद्धति का एक विशेष गुण अथवा लक्षण है।

इससे भी अधिक गाय जो हमें दूध देती है उसे भी माता के स्थान पर स्थापित किया गया है और ‘गौमाता’ कहा जाता है। हिन्दुओं के द्वारा खाद्य सामग्री के रूप में ‘गौमांस’ के निषेध का यही आधार है।

उपरोक्त सभी को ध्यान में रखते हुये, अर्नाल्ड टायनबी ने इस प्रकार कहा है -
‘एक अध्याय, जिसका प्रारम्भ पाश्चात्य था; उसका भारतीय अन्त होना आवश्यक है, यदि यह मानव प्रजाति के आत्म-विनाश का अन्त नहीं है..... मानव इतिहास के इस सर्वोच्च विनाशकारी क्षण में, मानवता के लिये, भारतीय शैली ही एकमात्र मोक्ष का मार्ग है।’

संस्कृति तथा राष्ट्रीयता पर सर्वोच्च न्यायालय एवं गांधीजी

उपरोक्त तथा हिन्दू जीवन पद्धति के अन्य मूल्यों के प्रचलनों से ही, हिन्दू संस्कृति का अभ्युदय हुआ है जिसने इस देश के लोगों को एक राष्ट्र के बंधन में जोड़ रखा है। इस पक्ष को सर्वोच्च न्यायालय द्वारा भी प्रदीप जैन प्रकरण में (ए.आई.आर. १९८४ एस.सी. १४२०) प्रभावशाली ढंग से निम्न शब्दों में रखा गया है -
‘यह इतिहास का एक रोचक तथ्य है कि भारत को सहस्राब्दियों में उद्विकसित एक समान संस्कृति के कारण राष्ट्र के रूप में गढ़ा गया है न कि किसी समान भाषा अथवा इसके क्षेत्रों के आधार पर अथवा निरंतर एक क्षेत्रीय राजनीतिक शासनाधिकार के कारण यह अस्तित्व में आया है। यह सांस्कृतिक एकता - किसी अन्य बंधन की अपेक्षा अधिक आधारभूत व सतत है जो कि देश के लोगों को जोड़े रख सकती है - जिसने इस देश को, एक राष्ट्र के अटूट बंधन में बांधा है।’

उपरोक्त हिन्दू संस्कृति ही हिन्दू जीवन पद्धति का एक सारभूत प्रत्यय है। महात्मा गांधी ने हिन्दू जीवन पद्धति को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्वीकार किया है जिसकी परिणति हमारी संस्कृति में हुई है। उन्होंने इस प्रकार से कहा है - 'मेरे अभिमत में किसी भी संस्कृति का खजाना इतना समृद्ध नहीं है जितना कि हमारा है। हमने इसका मूल्य संज्ञापित नहीं किया है। यदि हम अपनी संस्कृति का अनुपालन नहीं करते हैं तो एक राष्ट्र के रूप में, हम आत्महत्या कर रहे होंगे।' (साबरमती आश्रम की दीवारों पर अंकित)

'जैसे पश्चिम में उन्होंने लुभावनी भौतिक चीजें खोजी हैं, इसी प्रकार से हिन्दुत्व ने, इससे और अधिक महत्वपूर्ण चीजें धर्म, अध्यात्म तथा आत्मा में खोजी है, लेकिन इन महान् एवं सुन्दर चीजों पर हमारी दृष्टि नहीं जाती है। हम पश्चिमी विज्ञान की भौतिक प्रगति की चकाचौंध से प्रभावित है, मैं इस प्रगति से मोहित नहीं हूँ।'

वस्तुतः हिन्दुत्व में, ऐसा कुछ है जिसने इसे आज तक जीवित रखा है। इसने बेबीलोन, पर्सीयन तथा मिस्र की सभ्यताओं का विनाश देखा है। अपने चारों तरफ देखो, रोम कहाँ है और कहाँ है यूनान ? आज तुम कहीं भी गिबबन का इटली या प्राचीन रोम नहीं देख सकते, इटली जाने पर क्या तुम्हें प्राचीन रोम दिखाई देगा ? ग्रीस (यूनान) जाओ, वहाँ क्या विश्व प्रसिद्ध सबसे बड़ी सभ्यता के दर्शन होते हैं ? दूसरी ओर भारत आते हुये, किसी को अत्यन्त प्राचीन आलेखों का अध्ययन करने दो और तुम्हारे चारों तरफ देखने दो। तब उसे यह कहने में कठिनाई नहीं होगी कि हां, मैं यहाँ प्राचीन भारत को, आज भी जीवित देख रहा हूँ। यह सच है कि यहाँ-वहाँ गोबर के ढेर लगे हैं, लेकिन उनके नीचे भरपूर खजाना दबा हुआ है और यह क्यों बचा रहा है इसका कारण है कि हिन्दुत्व ने अपने समक्ष जो लक्ष्य निर्धारित किये थे, वे भौतिक नहीं आध्यात्मिक आधारों पर विकसित हुये थे। हमारी सभ्यता, हमारी संस्कृति, हमारा स्वराज्य, हमारी आवश्यकताओं के प्रतिबन्धन व आत्मनिषेध पर आधारित रहे हैं न कि आवश्यकताओं की अभिवृद्धि व आत्मानुग्रह पर (माई पिक्चर आफ फ्री इंडिया, पेज १०)।

'हमारी सभ्यता का मूल सत्व है कि हम अपने सभी सार्वजनिक और निजी मामलों में, नैतिकता को सर्वोच्च स्थान प्रदान करते हैं'... 'मेरा स्वराज, हमारी सभ्यता के उद्भव को सुरक्षित रखना है। यह अनेक नई बातें लिखना चाहता है लेकिन वे सभी, भारतीय स्लेट पर ही लिखी जानी चाहिए।' (पूर्वोक्त-६४-८५)

उपर्युक्त पक्ष हिन्दुत्व के प्रधान पक्ष हैं।

एक दृष्टि और जीवन पद्धति

हिन्दुत्व, धर्म का पर्यायवाची है, जो कि भारतवर्ष में प्रचलित उन सभी आचार-विचारों का, जो कि व्यक्ति और समाज में पारस्परिक सामाजिक समरसता, संतुलन तथा मोक्ष प्राप्ति के सहायक तत्वों को स्पष्ट करता है। यह एक जीवन-दर्शन और जीवन पद्धति है जो मानव समाज में फैली समस्याओं को सुलझाने में सहायक है। अभी तक हिन्दुत्व को मजहब के समानार्थ मानकर उसे गलत समझा गया था, उसकी गलत व्याख्या की गई, क्योंकि मजहब मात्र पूजा की एक पद्धति है जबकि हिन्दुत्व एक दर्शन है जो मानव जीवन का समग्रता से विचार करता है। समाजवाद और साम्यवाद भौतिकता पर आधारित राजनैतिक एवं आर्थिक दर्शन हैं जबकि हिन्दुत्व एक दर्शन है जो मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं के अतिरिक्त उसकी मानसिक, बौद्धिक और भावनात्मक आवश्यकता की भी पूर्ति करता है। कोई व्यक्ति मात्र सुविधाओं की प्राप्ति से प्रसन्न नहीं रह सकता। हिन्दुत्व एक जीवन पद्धति है जो व्यक्ति की सभी वैध आवश्यकताओं और अभिलाषाओं को संतुष्ट करती है ताकि व्यक्ति मानवता के सिद्धांतों के साथ प्रसन्न रह सके।

उच्चतम न्यायालय की दृष्टि में हिन्दू, हिन्दुत्व और हिन्दुइज़्म

क्या हिन्दुत्व को सच्चे अर्थों में धर्म कहना सही है? इस प्रश्न पर उच्चतम न्यायालय ने - “शास्त्री यज्ञपुरुष दास जी और अन्य विरुद्ध मूलदास भूरदास वैश्य और अन्य (१९६६(३) एस.सी.आर. २४२) के प्रकरण का विचार किया। इस प्रकरण में प्रश्न उठा था कि क्या स्वामी नारायण सम्प्रदाय हिन्दुत्व का भाग है अथवा नहीं है?

इस प्रकरण में उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री गजेन्द्र गड़कर ने अपने निर्णय में लिखा -

“जब हम हिन्दू धर्म के संबंध में सोचते हैं तो हमें हिन्दू धर्म को परिभाषित करने में कठिनाई अनुभव होती है। विश्व के अन्य मजहबों के विपरीत हिन्दू धर्म किसी एक दूत को नहीं मानता, किसी एक भगवान की पूजा नहीं करता, किसी एक मत का अनुयायी नहीं है, वह किसी एक दार्शनिक विचारधारा को नहीं मानता, यह किसी एक प्रकार की मजहबी पूजा पद्धति या रीति नीति को नहीं मानता, वह किसी मजहब

या सम्प्रदाय की परम्पराओं की संतुष्टि नहीं करता है। बृहद रूप में हम इसे एक जीवन पद्धति के रूप में ही परिभाषित कर सकते हैं इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं।”

रमेश यशवंत प्रभु, विरुद्ध प्रभाकर कुन्ते (ए.आई.आर. १९६६ एस.सी. १११३) के प्रकरण में उच्चतम न्यायालय को विचार करना था कि विधानसभा के चुनावों के दौरान मतदाताओं से हिन्दुत्व के नाम पर वोट मांगना क्या मजहबी भ्रष्ट आचरण है। उच्चतम न्यायालय ने इस प्रश्न का नकारात्मक उत्तर देते हुये अपने निर्णय में कहा-

“हिन्दू, हिन्दुत्व, हिन्दुइज्म को संक्षिप्त अर्थों में परिभाषित कर किन्हीं मजहबी संकीर्ण सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता है। इसे भारतीय संस्कृति और परम्परा से अलग नहीं किया जा सकता। यह दर्शाता है कि हिन्दुत्व शब्द इस उप महाद्वीप के लोगों की जीवन पद्धति से संबंधित है। हिन्दुत्व और हिन्दुइज्म को संकीर्णता से परिभाषित करना दुष्कर कार्य है। इसे कट्टरपंथी मजहबी संकीर्णता के समान नहीं कहा जा सकता। साधारणतया हिन्दुत्व को एक जीवन पद्धति और मानव मन की दशा से ही समझा जा सकता है।”

अन्तर्राष्ट्रीय शब्दकोष और केरीब्राउन

वेबस्टर के अंग्रेजी भाषा के तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय शब्दकोष के विस्तृत संकलन में हिन्दुत्व का अर्थ इस प्रकार दिया गया है -

“यह सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक विश्वास और दृष्टिकोण का जटिल मिश्रण है। यह भारतीय उप महाद्वीप में विकसित हुआ। यह जातीयता पर आधारित, मानवता पर विश्वास करता है। यह एक विचार है जो कि हर प्रकार के विश्वासों पर विश्वास करता है तथा धर्म, कर्म, अहिंसा, संस्कार व मोक्ष को मानता है और उनका पालन करता है। यह ज्ञान का रास्ता है, स्नेह का रास्ता है, जो पुनर्जन्म पर विश्वास करता है। यह एक जीवन पद्धति है जो हिन्दू की विचारधारा है।”

अंग्रेजी लेखक केरीब्राउन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ‘द इसेन्शियल टीचिंग्स ऑफ हिन्दुइज्म’ में अपने विचार इन शब्दों में व्यक्त किये हैं -

“आज हम जिस संस्कृति को हिन्दू संस्कृति के रूप में जानते हैं और जिसे भारतीय सनातन धर्म या शाश्वत नियम कहते हैं वह उस मजहब से बड़ा सिद्धान्त है जिस मजहब को पश्चिम के लोग समझते हैं। कोई किसी भगवान में विश्वास करे या किसी ईश्वर में विश्वास नहीं करे फिर भी वह हिन्दू है। यह एक जीवन पद्धति है यह मस्तिष्क की एक दशा है।”

डॉ. राधाकृष्णन के विचार :

डॉ. राधाकृष्णन ने अपनी पुस्तक “द हिन्दू व्यू ऑफ लाइफ” में हिन्दुत्व के स्वभाव का विवरण दिया है -

“अगर हम हिन्दुत्व के व्यावहारिक भाग को देखें तो हम पाते हैं कि यह जीवन पद्धति है न कि कोई विचारधारा। हिन्दुत्व जहाँ वैचारिक अभिव्यक्ति को स्वतंत्रता देता है वहीं वह व्यावहारिक नियम को सख्ती से अपनाने को कहता है। नास्तिक अथवा आस्तिक सभी हिन्दू हो सकते हैं, बशर्ते वे हिन्दू संस्कृति और जीवन पद्धति को अपनाते हों। हिन्दुत्व धार्मिक एकरूपता पर जोर नहीं देता, वरन् आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाता है। इस या उस दृष्टिकोण का अनुयायी कभी भी दुष्ट प्रवृत्ति का अनुगमन नहीं करेगा। वास्तव में व्यावहारिकता, सिद्धांत के पूर्व की स्थिति है। हमारा धार्मिक और आध्यात्मिक चिंतन चाहे जो हो पर इस बात पर सभी सहमत हैं कि हमें अपने हितकारियों के प्रति आभारी और दुर्भाग्यहीनों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करनी चाहिए। हिन्दुत्व सामाजिक जीवन पर जोर देता है और उन लोगों को साथी बनाता है जो नैतिक मूल्यों से बंधे होते हैं। हिन्दुत्व कोई सम्प्रदाय नहीं है बल्कि उन लोगों का समुदाय है जो दृढ़ता से सत्य को पाने के लिये प्रयत्नशील हैं।”

धर्म पर उच्चतम न्यायालय का कथन

‘धर्म’ जिसे ऐतिहासिक कारणों से ‘हिन्दू धर्म’ कहा जाता है वह जीवन के उन सभी नियमों को शामिल करता है जो कि सामाजिक स्थायित्व और सुख के लिये आवश्यक है। भारत के उच्चतम न्यायालय की ओर से विचार व्यक्त करते हुये न्यायमूर्ति जे.रामास्वामी ने उक्त बात कही (ए.आई.आर. १९६६ एस.सी. १७६५) -

‘धर्म’ या ‘हिन्दू धर्म’ सामाजिक सुरक्षा और मानवता के उत्थान के लिये किये गये कार्यों का समन्वय करता है। उन सभी प्रयासों का इसमें समावेश है जो कि उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति में तथा मानव मात्र की प्रगति में सहायक होते हैं। यही धर्म है, यही हिन्दू धर्म है और अन्ततः यही सर्वधर्म समभाव है। (पैरा ८१)

इसके विपरीत भारत के एकीकरण हेतु धर्म वह है जो कि स्वयं ही अच्छी चेतना या किसी की प्रसन्नता के वांछित प्रयासों से प्रस्फुटित एवं सभी के कल्याण हेतु भय, इच्छा, रोग से मुक्त, अच्छी भावनाओं एवं बंधुत्व भाव, एकता एवं मित्रता को

स्वीकृति प्रदान करता है। यही वह मूल 'रिलीजन' है जिसे संविधान सुरक्षा प्रदान करता है।' (पैरा ८२)

हिन्दुत्व के प्रधान पक्ष

हिन्दू जीवन पद्धति के अनेक विशिष्ट लक्षण हैं। इसके प्रमुख आयाम इस प्रकार हैं -

- (१) **कृतज्ञता** : व्यक्तियों एवं अन्य जीवित प्राणियों के प्रति जो हमारे सहयोगी रहे हैं, कृतज्ञता का भाव रखना, हिन्दू जीवन पद्धति है। ईश्वर के किसी रूप अथवा चुनी गई विधि से उपासना का आधार भी यही भावना है। पुनः यही भावना देवताओं के समान माता, पिता एवं शिक्षक के प्रति आदर का आधार है। पति एवं पत्नी के मध्य अटूट बंधन का आधार भी यही कृतज्ञता की भावना है। पुनश्च, यही कृतज्ञता की भावना पेड़-पौधों एवं पशुओं की पूजा की प्रथा, साथ ही दशहरे के आयुध पूजा के दिन, सभी उपकरणों अथवा औजारों जिनसे हम जीविकोपार्जन करते हैं, की उपासना का आधार है। इस भावना के कारण ही गायों, बछड़ों, बैलों के वध को निषिद्ध किया गया है, क्योंकि गाय हमें बाल्यावस्था से मृत्यु तक जीवनदायी दूध प्रदान करती है तथा बैल, कृषि एवं परिवहन में हमारी सहायता करते हैं। हम गाय की पूजा, गौमाता के रूप में करते हैं।
- (२) **परोपकार** : दूसरों के प्रति सहृदय होना विशेषकर उनके प्रति जिनको इसकी तत्काल आवश्यकता है। उन्हें भोजन, धन, दवा अथवा अन्य किसी प्रकार की सहायता प्रदान करना ही ईश्वर की सेवा के बराबर है। कहा गया है - नरसेवा ही नारायण सेवा है।
- (३) **अहिंसा** : साथी मनुष्यों एवं अन्य जीवित प्राणियों को शारीरिक अथवा मानसिक चोट नहीं पहुंचाना।
- (४) **माता-पिता एवं शिक्षकों के प्रति आदर** : प्रत्येक व्यक्ति को अपने माता-पिता एवं शिक्षक का आदर भक्तिभाव से कर उनकी सेवा ईश्वर के समान ही करनी चाहिये। विशेषतः उसे अपने माता-पिता के अशक्त एवं वृद्ध होने पर देखभाल करनी चाहिये। तथा उन्हें बाहर वृद्धाश्रम (ओल्ड ऐज रेसक्यू हाउसेज) में नहीं ढकेलना चाहिये। यह हिन्दू जीवन पद्धति का अतिआवश्यक मूल्य है।

होगा और इस परमाणु युग में यही एकमात्र मार्ग है जो हमें नष्ट होने से बचा सकता है।

विभाग- ३

हिन्दुत्व

यह भी इन्होंने ही कहा -

३.१ उपनिषदों पर आर्थर शोपेनहावर :

विश्वभर में ऐसा कोई अध्ययन नहीं है जो उपनिषदों जितना हितकारी और उदात्त हो। वही मेरे जीवन को शांति देता रहा है और वही मृत्यु में भी शांति देगा।

३.२ हेनरी डेविड थोरो :

वेदों का जो सार मैंने पढ़ा है वह मेरे लिये अत्युच्च और अतिशुद्ध ज्योतिर्मय पिंड के प्रकाश जैसा है जो उन्नत मार्ग को बिना किसी जटिलता के सरल और सार्वभौम तरीके से समझाता है। वह मेरे लिये तारों भरी रात्रि में सुदूर आकाश से आने वाले पूर्ण चन्द्रमा के प्रकाश जैसा है।

गीता के बारे में उन्होंने कहा -

प्रातःकाल मैं अपनी बुद्धिमत्ता को अपूर्व और ब्रह्मांडव्यापी गीता के तत्त्वज्ञान से स्नान कराता हूं, जिसकी तुलना में हमारा आधुनिक विश्व और उसका साहित्य अत्यन्त क्षुद्र एवं तुच्छ जान पड़ता है।

३.३ गवर्नर वॉरेन हेस्टिंग्स :

भारत में गीता जैसे तत्त्वज्ञान के संदेश तब भी जीवित रहेंगे, जब अंग्रेजों के साम्राज्य का अस्तित्व भारत में से बहुत पहले ही नष्ट हो चुका होगा तथा संपत्ति व सामर्थ्य द्वारा उन्होंने प्राप्त किए हुए स्रोत काल स्मृति में नष्ट हो चुके होंगे।

३.४ हिन्दू धर्म ग्रंथों पर राल्फ वाल्डो इमर्सन :

मौलिक एकात्मता की अवधारणा पर चिंतन सभी देशों में होता है। प्रार्थना से प्राप्त तन्मयता और भक्ति से प्राप्त परमानन्द सब से तादात्म्य की अनुभूति देता है। वेद, गीता, विष्णु पुराण जैसे हिन्दू धर्मग्रंथों में इसी भाव की सर्वोच्च अभिव्यक्ति प्रकट होती है।

‘गीता’ पर उन्होंने कहा : मैं भगवद्गीता का अत्यन्त ऋणी हूं। यह पहला ग्रंथ है जिसे पढ़कर मुझे लगा कि कोई विराट शक्ति से हमारा संवाद हो रहा है। इसमें क्षुद्रता और अनुपयुक्तता से परे, उच्चतम प्रज्ञा की स्पष्ट, शीतल, तर्कशुद्ध ध्वनि

है जिसकी हुंकार बीते युग एवं माहौल के होते हुए भी वर्तमान समस्याओं का निदान एवं उपाय बताने में पूरी तरह सक्षम है।

३.५ भारत एवं हिन्दुत्व पर एनी बेसेंट :

विश्व के विभिन्न धर्मों का लगभग चालीस वर्ष अध्ययन करने के पश्चात् मैं इस नतीजे पर पहुंची हूं कि हिन्दुत्व जैसा परिपूर्ण, वैज्ञानिक, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक धर्म और कोई नहीं। इसमें कोई भूल न करें कि बिना हिन्दुत्व के भारत का कोई भविष्य नहीं। हिन्दुत्व ऐसी भूमि है जिसमें भारत की जड़ें गहराई तक पहुंची हैं, उन्हें यदि उखाड़ा गया तो यह महावृक्ष निश्चय ही अपनी भूमि से उखड़ जाएगा। हिन्दू ही यदि हिन्दुत्व की रक्षा नहीं करेंगे तो और कौन करेगा ? अगर भारत के सपूत हिन्दुत्व में विश्वास नहीं करेंगे, तो कौन उसकी रक्षा करेगा ? भारत ही भारत की रक्षा करेगा। भारत और हिन्दुत्व एक ही है।

३.६ गीता पर आल्डस हक्सले :

स्थायी दर्शन का सुस्पष्ट एवं सर्वस्व सार है गीता। अतः इसका चिरंतन मूल्य न केवल भारतीयों के लिए अपितु समूची मानव जाति के लिए है।

३.७ विल्हम वॉन हम्बोल्ट :

गीता एक अत्यन्त सुन्दर और संभवतः एकमात्र सच्चा दार्शनिक गीत है जो किसी अन्य भाषा में नहीं। वह एक ऐसी गहन एवं उन्नत वस्तु है जिस पर सारी दुनिया गर्व कर सकती है।

३.८ प्रो. ब्रायन डेविड जोसेफसन (फ्रांस) - सबसे कम आयु के नोबल पुरस्कार विजेता :

वेदांत और सांख्य में मन और विचार प्रणाली जो क्वांटम फील्ड (अर्थात् परमाणु और आण्विक स्तर पर कणों की क्रिया और वितरण) जैसे हैं - के लिये कुंजी है।

३.९ नानी पालखीवाला :

हमारे प्राचीन मनीषियों ने ब्रह्म अर्थात् अंतिम सत्य के बारे में जो कहा वह वैसा ही है जैसा हमारे आज के महान् वैज्ञानिक भौतिक पदार्थ के पहेलीनुमा गुणधर्म के बारे में सोचते हैं। विज्ञान जितना आगे बढ़ता है उतना वह वेदान्त के समीप जाता है। ऐसी है हमारी महान् विरासत, और फिर भी हम क्षणिक तुच्छ विषयों में उलझे रहने के कारण उसकी ओर यदा-कदा ही जाते हैं।

३.१० यहूदी मेन्यूहिन-विश्व विख्यात वायलिन वादक :

एक औसत पश्चिमी व्यक्ति से एक हिन्दू सौ गुना अधिक परिष्कृत, अधिक सुसंस्कृत, अधिक प्रामाणिक, अधिक धार्मिक और अधिक संतुलित है।

३.११ स्वामी विवेकानन्द :

हिन्दुत्व में भारत की जीवन शक्ति विद्यमान है और जब तक हिन्दू जाति अपने पूर्वजों की विरासत को नहीं भूलती है तब तक धरती की कोई भी शक्ति उन्हें नष्ट नहीं कर सकती।

३.१२ महात्मा गांधी :

हिन्दुत्व सत्य की चिरंतन खोज का नाम है और आज यदि वह मृतप्राय, अप्रगतिशील दिखता है तो मात्र इसलिये कि हम थके हुए हैं। जैसे ही यह थकावट दूर होगी, विश्व के समक्ष अकल्पनीय तेजस्विता से हिन्दुत्व का विस्फोट होगा।

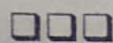
विभाग - ४

हिन्दू विचार की श्रेष्ठता

क्या आप जानते थे ?

- ४.१ अमेरिका को किसने खोजा ? क्रिस्टोफर कोलम्बस ने ? जी नहीं। अजतीस के देवालयों में प्राप्त भारतीय कला के नमूने साबित करते हैं कि अमेरिका में हिन्दू पहले ही पहुंचे हुए थे।
- ४.२ क्या भारत को वॉस्को-डि-गामा ने खोज निकाला ? बिल्कुल नहीं। वॉस्को-डि-गामा के जहाज को अफ्रीका से दक्षिण भारत तक एक भारतीय नाविक ने मार्गदर्शन किया। भारतीय जहाज वॉस्को-डि-गामा के जहाज से कई गुना बड़ा था।
- ४.३ तथाकथित पायथागोरस सिद्धान्त किसने सूत्रबद्ध किया ? पायथागोरस ने ? जी नहीं इस सिद्धान्त का उल्लेख पायथागोरस के पैदा होने से बहुत पहले भारत के शिल्पसूत्र में है।
- ४.४ गुरुत्वाकर्षण शक्ति की खोज किसने की ? न्यूटन ने ? नहीं। विख्यात भारतीय खगोलशास्त्री आर्यभट्ट एवं भास्कराचार्य इस शक्ति से परिचित थे, जो न्यूटन से क्रमशः एक हजार एवं पांच सौ वर्ष पहले के हैं।

- ४.५ विद्युत् शक्ति की खोज कब हुई ? लगभग सौ वर्ष पहले ? नहीं । वेदों में विद्युत् शक्ति, चुंबकत्व, ताप, प्रकाश, ध्वनि एवं ईश्वर की सुस्पष्ट परिभाषाएं दी हुई हैं । यहां तक कि परमाणु मिश्रण का सिद्धान्त भी वेदकाल में ज्ञात था ।
- ४.६ गणितज्ञ चन्द्रशेखर ने सितारे के सबसे बड़े आकार की गणना की । अब वैज्ञानिक उसी को चन्द्रशेखर सीमा कहते हैं ।
- ४.७ रामानुजम एक श्रेष्ठ गणितज्ञ थे जिन्होंने केंब्रिज विश्वविद्यालय के प्रो. हार्डी के साथ संभावना सिद्धान्त (Probability Theory) की खोज की । रामानुजम की मौलिक प्रतिभा को स्वयं हार्डी ने सौ में से सौ अंक दिए जबकि स्वयं को केवल पच्चीस । इस प्रकार हार्डी के मन में रामानुजम के प्रति इतना आदर था ।
- ४.८ शून्य की संकल्पना एवं दशमलव प्रणाली भारत के हिन्दू मनीषियों की ही खोज है ।
- ४.९ प्राचीन हिन्दू गणित के सहारे (जो वैदिक गणित इस नाम से जाना जाता है ।) कठिन से कठिन गणितीय प्रश्नों का एक या दो पंक्तियों में मौखिक उत्तर संभव है । विश्व हिन्दू परिषद् ऑस्ट्रेलिया में समय-समय पर वैदिक गणित की निःशुल्क कार्यशाला आयोजित करती है ।
- ४.१० संगणक (Computer) में सभी गणना के लिये प्रयुक्त द्वयंक संख्या की संकल्पना हिन्दू पुराणों में हजारों वर्ष पूर्व अस्तित्व में थी । द्वयंक प्रणाली में संख्या या तो (अस्ति) अथवा ० (नास्ति) होती है । सभी संख्याएं १ और ० का मिश्रण हैं । हमारे उपनिषद् कहते हैं - 'समूची सृष्टि १ अर्थात् अस्ति और ० अर्थात् नास्ति का मिश्रण है ।' उपर्युक्त कथन और तथ्य तो मात्र एक झलक है - पूर्ण सूची बनाने का प्रयत्न करें तो यह अंतहीन होगी । किन्तु आज के भारत में यदि हम उस महान् भारत की झलक भी नहीं देखते हैं तो इसका अर्थ है कि हमें अपनी क्षमता का कोई अता-पता नहीं और यदि है, तो हम पुनः एक बार एक तेजस्वी एवं प्रेरणादायी देश के रूप में उभर सकते हैं जिसके द्वारा प्रकाशित मार्ग पर शेष विश्व अनुयायी बनेगा । आइए, हम अपने आत्मविश्वास को जगाएं । जो हमारे पूर्वज कर सके उसे हम उनकी सुयोग्य संताने क्यों नहीं कर सकतीं ?



सार-संक्षेप

वर्तमान विषय का सार-संक्षेप, निम्नलिखित प्रार्थना के साथ करना उपयुक्त होगा जो कि हिन्दू मत तथा हिन्दू जीवन पद्धति के मूल तत्वों को प्रदर्शित करती है -

सर्वे भवन्तु: सुखिनः , सर्वे सन्तु निरामयाः

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु , मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ।

सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों, सभी को शुभ दर्शन हों और कोई दुःख से ग्रसित न हो।

लोका समस्ता सुखिनः भवन्तु - सभी लोग सुखी हों।

♦♦♦♦

गर्व से कहो हम हिन्दू हैं क्यों ?

विभाग-१

हिन्दू

- १.१ हिन्दुओं ने गत दस हजार वर्ष के अपने इतिहास में राजनीतिक विजय के द्वारा किसी भी देश को अपना उपनिवेश नहीं बनाया।
- १.२ हिन्दुओं ने संख्या प्रणाली का अन्वेषण किया। पांचवीं शताब्दी में आर्यभट्ट ने शून्य (०) का प्रयोग किया। आर्यभट्ट से भी हजारों वर्ष पूर्व वैदिक कालखंड में शून्य का ज्ञान था। हिन्दुओं ने ही विश्व को दशमलव प्रणाली दी।
- १.३ दुनियाँ का पहला विश्वविद्यालय ईसा पूर्व ७०० में तक्षशिला में स्थापित हुआ। वहां विश्वभर से आए दस हजार से अधिक छात्र ६० से अधिक विषयों का अध्ययन करते थे। ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में स्थापित नालंदा विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीन भारत की एक अनूठी उपलब्धि थी।
- १.४ सभी यूरोपीय भाषाओं की जननी संस्कृत है। फोबर्स पत्रिका (जुलाई, १९८७) के अनुसार कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर के लिये संस्कृत सर्वाधिक उपयुक्त भाषा है।

- १.५ आयुर्वेद ही मनुष्य को ज्ञात सबसे पहली चिकित्सा प्रणाली है। औषधि विज्ञान के जनक चरक ने २५०० वर्ष पूर्व आयुर्वेद का निर्माण किया। हमारी सभ्यता में आज आयुर्वेद अपना उचित स्थान तेजी से पुनः प्राप्त कर रहा है।
- १.६ यद्यपि आधुनिक भारत की छवि एक गरीब एवं अविकसित देश के रूप में प्रस्तुत की जाती है, परन्तु सत्रहवीं शताब्दी में अंग्रेजों के आक्रमण के पूर्व भारत इस धरती का सर्वाधिक समृद्ध देश था।
- १.७ नौ-परिवहन का सूत्रपात छह हजार वर्ष पूर्व सिंधु नदी में हुआ। अंग्रेजी शब्द (NAVIGATION-नेविगेशन) नौ-परिवहन की उत्पत्ति संस्कृत शब्द 'नवगति' से हुई। इसी प्रकार अंग्रेजी शब्द NAVY-नेवी (नौ-सेना) भी संस्कृत के 'नौ' से ही विकसित हुआ।
- १.८ भास्कराचार्य ने खगोलशास्त्री स्मार्त से सैकड़ों वर्ष पूर्व पृथ्वी की सूर्य प्रदक्षिणा की अवधि नापी थी। पांचवीं शताब्दी में यह अवधि ३६५.२५८७५६४८४ दिन निर्धारित की गई।
- १.९ 'पाय' का मूल्य सबसे पहले बोधायन ने आंका। उसी ने उसका सिद्धांत परिभाषित किया जो 'पायथागोरियन सिद्धांत' के नाम से जाना जाता है। बोधायन ने यह कार्य यूरोपीय गणितज्ञों से बहुत पहले ईसा पूर्व छठी शताब्दी में किया था।
- १.१० बीजगणित, त्रिकोणमिति एवं कैलक्यूलस भारत की ही विश्व को देन हैं। श्रीधराचार्य ने ग्यारहवीं शताब्दी में वर्ग समीकरण (Quadratic equation) की व्याख्या की। ग्रीकों और रोमनों द्वारा उपयोग में लाया जाने वाला अधिकतम अंक १०६ था, जबकि ईसापूर्व ५००० वर्ष पहले वैदिक काल में हिन्दू १०^{४३} जैसे बड़े तक विशिष्ट नामों के साथ प्रयोग में लाते थे। आज भी विशिष्ट नाम से उपयोग किया जाने वाला अधिकतम अंक 'टेरा' (१०^{१२}) है।
- १.११ जेमोलॉजिकल इंस्टीट्यूट ऑफ अमेरिका के अनुसार वर्ष १८९६ तक विश्व में भारत ही रत्नों का एकमात्र स्रोत था।
- १.१२ अमेरिका स्थित आई.ई.ई.ई. ने साबित किया कि प्रो. जगदीशचन्द्र बसु ही बेतार संचार प्रणाली के अन्वेषक थे, न कि मार्कोनी, जिसके बारे में विश्व का वैज्ञानिक समाज सौ साल भ्रम में रहा।
- १.१३ सिंचाई के लिये जलाशय एवं बांध का निर्माण सबसे पहले भारत में सौराष्ट्र में हुआ।

- १.१४ ईसा पूर्व १५० वर्ष के शक राजा - रुद्रदमन प्रथम के अनुसार, खेतक पहाड़ी पर मनोरम झील - 'सुदर्शन' का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य के कार्यकाल में हुआ।
- १.१५ शतरंज (चतुरंग या अष्टपद) का मूल स्थान भारत ही है।
- १.१६ शल्य चिकित्सा के प्रणेता थे - सुश्रुत। २६०० वर्ष पूर्व सुश्रुत तथा समकालीन चिकित्सा शास्त्रियों ने अति जटिल शल्यक्रियाएं कीं, जैसे - सिजेरियन, मोतियाबिंद, अवयव प्रत्यारोपण, पथरी आदि। यहां तक कि प्लास्टिक एवं मस्तिष्क शल्य क्रिया भी होती थी। उन्हें बेहोशी की दवा का भी ज्ञान था। उस समय शल्य क्रिया में सवा सौ से अधिक उपकरण प्रयुक्त होते थे। अनेक प्राचीन ग्रंथों में शरीरशास्त्र, जन्तु-वनस्पतिविज्ञान (Etiology), भ्रूण विज्ञान, पाचनक्रिया, चयापचय (Metabolism) आनुवंशिकता विज्ञान (Genetic) और रोग से प्रतिरक्षा का गहरा ज्ञान पाया जाता है।
- १.१७ पांच हजार वर्ष पूर्व जब विश्व की अनेक सभ्यताएं जंगल निवासी घुमंतू लोगों तक ही सीमित थीं, हिन्दुओं ने सिन्धु घाटी में हड़प्पा सभ्यता का विकास किया।
- १.१८ स्थान मूल्य प्रणाली, दशमलव प्रणाली का विकास भारत में ही ईसा पूर्व पहली शताब्दी में हुआ।

विभाग-२

हिन्दुस्थान....

इन्होंने कहा था -

२.१ अल्बर्ट आइंस्टीन :

हम भारत के बहुत ऋणी हैं, जिसने हमें गिनती सिखाई, जिसके बिना कोई भी सार्थक वैज्ञानिक खोज संभव नहीं हो पाती।

२.२ मार्क ट्वेन :

भारत उपासना पंथों की भूमि, मानव जाति का पालना, भाषा की जन्मभूमि, इतिहास की माता, पुराणों की दादी एवं परंपरा की परदादी है। मनुष्य के इतिहास में जो भी मूल्यवान एवं सृजनशील सामग्री है, उसका भंडार अकेले भारत में है। यह ऐसी भूमि है जिसके दर्शन के लिए सब लालायित रहते हैं और एक बार उसकी हल्की-सी झलक मिल जाए तो

दुनिया के अन्य सारे दृश्यों के बदले में भी वे उसे छोड़ने के लिये तैयार नहीं होंगे।

२.३ फ्रांसीसी विद्वान् रोमां रोलां :

मानव ने आदिकाल से जो सपने देखने शुरू किए उनके साकार होने का इस धरती पर कोई स्थान है तो वह है भारत।

२.४ अमेरिका में चीन के राजदूत हू शिह:

सीमा पार एक भी सैनिक न भेजते हुए भारत ने बीस सदियों तक सांस्कृतिक धरातल पर चीन को जीता और उसे प्रभावित किया।

२.५ मैक्स मूलर :

यदि मुझसे कोई पूछे कि किस आकाश के तले मानव मन अपने अनमोल उपहारों समेत पूर्णतया विकसित हुआ है, जहां जीवन की जटिल समस्याओं का गहन विश्लेषण हुआ और समाधान भी प्रस्तुत किया गया, जो उसके भी प्रशंसा का पात्र हुआ जिन्होंने प्लेटो एवं कांट का अध्ययन किया, तो मैं भारत का नाम लूंगा। यदि कोई मुझसे पूछे कि वह कौन सा साहित्य है जिससे हम यूरोपीय लोग (जो आज तक केवल ग्रीक, रोमन और यहूदी विचारों पर पाले-पोसे गये हैं) उन उत्तुंग विचारों को प्राप्त कर सकते हैं जो हमारे आंतरिक जीवन को अधिक परिपूर्ण, अधिक वैश्विक और सही अर्थों में मानवीय बनाने के लिये नितांत आवश्यक है, जो केवल इस जीवन के लिये ही नहीं अपितु देहान्तर और शाश्वत जीवन के लिये भी आवश्यक है, तो मैं पुनः भारत की ओर ही इंगित करूंगा।

२.६ बिल ड्यूरांट :

हमारे आक्रमण, उदण्डता एवं लूटपाट के बदले भारत हमें सिखायेगा सहिष्णुता और परिपक्व मन की मृदुता और अजेय आत्मा का निश्छल संतोष, सामंजस्य भावना की शीतलता तथा सभी प्राणीमात्र से एकरूपतायुक्त शांतिप्रद स्नेह।

२.७ आरनॉल्ड जोसेफ टायनबी :

मानव जाति के इतिहास के इस अति भयानक काल में सम्राट अशोक, रामकृष्ण परमहंस और महात्मा गांधी द्वारा बताया हुआ प्राचीन भारत का मार्ग ही उद्धार का एकमात्र मार्ग है। इसमें वह दृष्टिकोण और भावना है जिससे मानव जाति को एक परिवार के रूप में विकास करना संभव



-प्राप्ति स्थान- ज्ञान गंगा प्रकाशन, बी-११, न्यू कॉलोनी, जयपुर, पिन-३०२००९, दूरभाष: ३७९१६३

सहयोग राशि : २ रुपये